उत्तररामचरितम्

संस्कृत के महान् नाटककारों में भवभूति का गौरव कालिदास के समान माना जाता है। उनके नाटकों में भावपक्ष की अपूर्व तरलता दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि भवभूति को कालिदास के बाद नाटककारों की पंक्ति में पहला सम्मानित स्थान मिला है।

रचनाएं : भवभूति की तीन रचनाएं (नाटक) उपलब्ध हैं : 1. मालतीमाधवम्, 2. महावीरचरितम, 3. उत्तरामचरितम्

उत्तररामचरितम् भवभूति का अन्तिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। यह कृति भवभूति के जीवन के प्रौढ़ अनुभवों की देन है। कवि के अन्य दोनों नाटकों की अपेक्षा उत्तररामचरित की कथावस्तु नाटकीय तकनीक की दृष्टि से अधिक प्रौढ़ है। इतना होते हुए भी उत्तररामचरितम् में भी नाटकीय व्यापार का अभाव है। इसका मुख्य कारण है भवभूति की अत्यधिक भावुकता। यही कारण है कि उत्तररामचरितम् गीतिनाट्य की दृष्टि से सफल माना जा सकता है, कोरे नाटक की दृष्टि से नहीं। काव्य की दृष्टि से वह भवभूति की निःसन्देह महान कृति है। इसमें कुल सात अंक है। इनमें राम के उत्तरकालीन जीवन की कथा है। रामकथा के जिस कोमल पक्ष को लेकर भवभूति ने अपनी इस कृति को जिस सफलता के साथ रचा है वैसा श्रेय राम–परम्परा पर लिखे गए दूसरे ग्रंथों को आज तक नहीं मिल सका है।

लंका से लौटकर आने पर राम का राज्याभिषेक होता है। राज्याभिषेक के बाद जनक के मिथिला लौट जाने पर गर्भवती सीता के उदास मन को बहलाने के लिए राम चित्रशाला में ले जाते हैं। वहां वह अपने पूर्व जीवन के चित्रों को देखते हैं। सीता चित्रों को देखते–देखते थक कर राम के वक्षस्थल पर सो जाती है इसी समय दुर्मुख आकर सीता के चरित्र के सम्बन्ध में प्रचलित लोकापवाद की सूचना देता है। राम कर्त्तव्य पालन के लिए सीता को भगीरथी–दर्शन के बहाने जंगल में छुड़वा आते हैं। सीता अपने जीवन का अंत करने के लिए गंगा में कूद पड़ती है। वही लवकुश का जन्म होता है। गंगा ने सीता की रक्षा की और दोनों पुत्रों को वाल्मीकि के पास उनकी देख–रेख में सौंप दिया। राम सीता के

वियोग में बहुत दुःखी रहते हैं। राम अश्वमेध यज्ञ करने का तैयारी करते हैं। उनके अश्वमेध के घोड़े को उनका पुत्र लव पकड़ लेता है। राम के आने पर युद्ध रुक जाता है। राम की अज्ञात लव–कुश के प्रति स्नेह की भावना उमड़ पड़ती है। अन्त में लेखक ने सीता तथा राम का मिलन कराकर नाटक को सुखान्त बना दिया है।

उत्तररामचरितम् का मूल आधार वाल्मीकि रामायण का उत्तरकांड है, परन्तु भवभूति ने उसमें अनेक मौलिक परिवर्तन किए हैं। चित्रदर्शन, राम का वन देवता वासंती में मिलन, दण्डकारण्य में छाया के रूप में सीता की उपस्थिति, वाल्मीकि आश्रम में जनक, कौशल्या, वशिष्ठ, अरुन्धती आदि का आना तथा सातवें अंक में गर्भांक नाटक की योजना में सभी कवि की मौलिक कल्पनाएँ हैं।

उत्तररामचरितम् (भवभूति) की विशेषताएँ

उत्तररामचरितम् में नाट्यकला की दृष्टि से अनेक विशेषताएँ हैं। भाषा और शैली के विविध प्रयोगों में भवभूति एक विलक्षण कलाकार हैं। वे कोमल तथा गंभीर दोनों तरह के भावों के सफल चित्रकार हैं। मानवीय मनोभावाों के विश्लेषण और मार्मिक चित्रण में भवभूति अद्वितीय हैं।

आदर्श प्रेम का विशद चित्रण – प्रेम के संबंध में भवभूति का आदर्श अतिमहान् है। उन्होंने अपने नाटकों में विशुद्ध प्रेम का वर्णन किया है। प्रेम चित्रण में कामुकता, अश्लीलता के स्तर पर वे नहीं उतरते। उनकी दृष्टि में प्रेम तो अकारण स्वतः प्रेरित एवं अकथनीय होता है। प्रेम किन्ही बाह्य कारणों पर स्थापित नहीं होता।

भवभूति के अनुसार प्रेम की ज्योति सुख की अवस्था और दुःख की आंधी – दोनों में समान रूप से जला करती है।

जड़–चेतन प्रकृति के चित्रकार – भवभूति की शैली में प्रकृति वर्णन का भी प्रमुख स्थान है। प्रकृति के दृश्यों का वर्णन उन्होंने आलम्बन रूप में ही किया है, उद्दीपन के रूप में नहीं। उत्तररामचरितम् में

दण्डकारण्य का प्रकृति – चित्रण अद्वितीय है भवभूति केवल चेतन मानवीय प्रकृति के ही चित्रकार नहीं हैं अपितु जड़ प्रकृति के भी हैं।

करुणरस की प्रधानता – भवभ़ति अनेक रसों के वर्णन में सिद्धहस्त हैं। वीरों का गर्वपूर्वक गर्जन, अस्त्रों की झंकार आदि हमारे सामन युद्ध भूमि का चित्र उपस्थित कर वीर रस की सृष्टि करते हैं, परन्तु करुणारस के क्षेत्र में महाकवि भवभूति की समानता करने वाला अन्य कोई कवि नहीं है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते।'** उत्तररामचरितम् में तो करुणरस की अपूर्व व्यंजना हुई है। उनके मत में एक ही रस हैं और वह है करुण रस – **'एको रसः करुण एवं निमित्तभेदात्'**। उत्तररामचरितम् के तीसरे अंक में जो करुणरस की धारा बही है, वह अन्यत्र दुर्लभ ही है। वे करुणा का ऐसा स्रोत बहाते हैं कि निर्जीव पत्थर भी रो पड़ते हैं। उत्तररामचरितम् में राम सीता के वियोग में मूर्च्छित हो जाते हैं, सीता उनकी इस दशा को देखकर अत्यन्त द्रवीभूत होकर विलाप करने लगती है, उसे देखकर पत्थर ह्रदय भी रो उठता है। भवभूति का करुणरस अत्यन्त गम्भीर और मर्मस्पर्शी है। सचमुच उत्तररामचरितम् में जो करुणरस की मंदाकिनी प्रवाहित हुई है, वह अभूतपूर्व है।

भाषा सौन्दर्य – भवभूति अपने पात्रों के मुख्य रूप से तदनुरूप भाषा का प्रयोग करते हैं। श्रृंगार, करुण में भवभूति कोमलकान्त पदावली का प्रयोग करते हैं तो वीर और रौद्र में गौड़ी भाषा का प्रयोग करते हैं। अलंकारों का प्रयोग एक कलाकार की भाँति किया है। उन्होंने मौलिक उपमाओं का आविर्भाव किया है। उत्तररामचरितम् में कोमल विषय के अनुरूप कोमलशैली तथा गम्भीर विषय के अनुरूप गम्भीर शैली का प्रयोग हुआ है।

कहीं–कहीं व्यंग्य का बड़ा मार्मिक प्रयोग हुआ है। राम को पति न कहकर 'नूतन राजा' कहा गया है। राम द्वारा अपनी निर्दोष पत्नी के परित्याग की ओर व्यंग्यात्मक संकेत है। भवभूति चुने हुए शब्दों में भावप्रकाशन के स्थान पर विस्तार से भावों का प्रदर्शन करते हैं। उसमें वाच्यार्थ की प्रधानता है। वे ह्रदय की अन्तर्वेदना को अत्यधिक व्यक्त करके उसे अनुरंजित कर देते हैं।

भवभूति की गम्भीर शली में हास्य का विशेष स्थान नहीं है। यदि कहीं हास्य को अवधारणा की भी है तो वह बड़ी ही संयत एवं शिष्ट है। उनका गम्भीर हास्य हृदय में एक कोमल गुदगुदी–सी पैदा करके अपने पाण्डित्य से मुग्ध कर देने वाला है।

एक नाटककार की दृष्टि से भवभूति को हम उच्चकोटि का भले ही न मानें, कवि के रूप में भवभूति का स्थान निःसन्देह महान् है। कवि हृदय भवभूति में माघ से भी उन्नत है। किसी कवि ने भवभूति के विषय में ठीक ही कहा है –

' उत्तररामचरितम् भवभूति – विशिष्यते' अर्थात उत्तररामचरितम् में भवभूति ने कमाल कर दिया है।

मौलिकता एवं नवीनता – भवभूति ने अपने नाटकों में अनेक नवीनता तथा मौलिकता प्रदान की है। मूलकथा में अनेक प्रसंगों की कल्पना द्वारा उन्होंने अद्‌भुत काव्य रस की सृष्टि की है। चित्रदीर्घा दृश्य जिससे नाटक प्रारम्भ होता है, छायांक जिससे अदृष्ट सीता रामा की वेदना का अवलोकन करते हैं। गुरुजनों का पारस्परिक मिलन और अन्त में राम की पुत्रों से भेंट की कल्पना उत्कृष्ट नाटकीय प्रविधि और रुचि से की गई है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् से तुलना कर पर हम उत्तररामचरितम् में एक ऐसे संसार में भ्रमण करते पतीत होते हैं, जो अधिक गंभीर है, जिसमें गहनतम अनुभव होते हैं और जो अधिक संघर्षपूर्ण है। इसमें अनुपम सौन्दर्य के काव्यमय अवतरण हैं। उनके पात्रों में शक्तिशाली भाव हैं। उन्होंने पात्रों में मानवीय अनुभूति की विलक्षण महानता जोड़ी है।

निष्कर्ष – वास्तव में भवभूति ने हमें नाटकीय कविताएँ दी हैं, नाटक नहीं। उनकी मार्मिक कविता, उच्च गम्भीर–विचारशीलता, आध्यात्मिकता और दाम्पत्य प्रेम की उच्च कल्पना ने भवभूति को अमर कर दिया है।